पहली अफ्रीकी देश की यात्रा

येसु समाज के 70वें प्रोक्युरेटरस की आम सभा के लिये रांची प्रोविंश के प्रतिनिधि के रूप में नैरोबी आना हुआ है। फादर जोन मुंडु के साथ हम दोनों रांची से साथ चले हैं। हम यहॉ 85 प्रतिनिधि और अन्य मनोनीत सदस्यों को मिलाकर करीब 110 के आस पास होंगे। हमारा कार्यक्रम एक आठ दिवसीय ध्यान प्रार्थना के साथ शुरू होना है।

सत्ताइस अटठाइस जून दो हजार बारह को मुंबई से सुबह तीन बजे हमारा केन्याई एयरलाईन का विमान नैरोबी के लिये प्रस्थान किया। पहली बार अश्वेत केन्याई बालाओं को विमान में परिचारिकाओं के रूप में देखा। आम तौर पर लगता है कि विमान परिचारिकाओं को गोरी और तीखे नाक–नक्श का होना चाहिये। काले रंग की अपनी खूबसुरती है जिसमें सजी संवरी ये बालाएं अच्छी लग रही थीं। मुझे लगा कि उन्हें गोरा बनाने के लिये किसी क्रीम की आवश्यकता नहीं थी। अपने देश का स्वाभीमान उनके चेहरों पर स्पष्ट था। उद्घोषणा को सुनने से लगा कि पूरे दल में सभी केन्याई थे सिर्फ विमान चालक को छोड़कर। मुंबई एयरपोर्ट पर सवार होते हुए यात्रियों को देखने से लगा कि केवल एक केन्याई परिवार को छोड़कर सारे भारतीय लगते थे। यहां बताना उचित ही होगा कि जिस समय अंग्रेज केन्या में रेलवे लाइन बिछा रहे थे तब उन्होंने भारी तादात में भारतीयों को यहां लाया था। पहले कभी सुना था कि आदिवासियों को भी जिसमें मुंडा प्रधान रूप से थे, अंग्रेजों ने अफ्रीका लाया था लेकिन वे किस देश में लाये गये थे, इसका शोध करना जरूरी है क्योंकि वे भी यहीं रच बस गये हैं। केन्या को आजादी 1965 में मिली लेकिन भारतीय यहीं बस गये। आज मध्य वर्गीय व्यापार इन्हीं के हाथों में है।

मुंबई से नैरोबी की दूरी साढ़े पांच घंटों में पूरी की जानी थी, इसलिये विमान के पूरी तरह से हवा में आ जाने के बाद हम दोनों ने सो जाना उचित समझा क्योंकि सुबह के तीन बजे हमारी आंखें भारी थीं। करीब पांच घंटे की यात्रा पूरी करने के बाद परिचारिकाओं ने हमें जगाया और नाश्ता परोसा। व्यंजन पूरी तरह से भारतीय था। रात का खाना खाया करीब छ घंटा से ज्यादा हो चुका था इसलिये हम नाश्ता खत्म करने के बाद विमान के उतरने की प्रतीक्षा करने लगे। नैरोबी में सुबह के साढ़े छः बज रहे

थे जब हमारा विमान हिन्द महासागर पार करने के बाद जोकोमो एयरपोर्ट के रन वे पर दौड़ने लगा था। हवाई अड्डे पर अनेक देशों के विमानों का खड़ा देखकर हमें लगा कि नैरोबी काफी व्यस्त एयरपोर्ट होगा। पासपोर्ट की चेकिंग के बाद जब हम दोनों लाउंज पर पहुँचे तो देखा कि येसु समाजी प्रतिनिधियों की आगवानी के लिये ईस्ट अफरिकन प्रोविंश के स्कोलास्टिकस मुस्तैदी से तैनात हैं। आम लोगों को स्वेटर और गर्म कपड़े पहने देखकर हम रांची की गर्मी भूल गये। वातावरण में बेहद ताजगी और उर्जा देने वाली सरलता थी। देखते ही देखते करीब बारह येसु समाजी विभिन्न विमानों से आकर उस मिनी बस में सवार हो गये जिससे हमें कारेन स्थित एक रिटरीट हाउस में जाना था। सुबह के आठ बज रहे थे जब हम एयरपोर्ट से शहर की ओर चलने लगे। एक ही नजर में लगा कि नैरोबी एक खूबसूरत और बेहद उपजाउ जगह है। माना जाता है कि मानव की उत्पति केन्या देश में हुई। चारों ओर हरियाली और दूर में नीले आसमान के नीचे हरे जंगलों से घिरे पहाड़। शहर का इलाका आने के पहले विभिन्न देशों के कम्पनियों के ऑफिस और कारखाने एक के बाद एक दिखाई पड़ रहे थे। सड़कें चौड़ी और व्यस्त दिखाई पड़ी। साफ सफाई के मामले में भारत जितना गया गुजरा है उससे नैरोबी बहुत आगे है। सड़कों में मुख्यतः विदेशी मूल की कारें दौड़ रही थीं, यह कुछ चौंकाने वाली बात लगी। हॉ, आम आदमी के लिये निशान कंपनी की मटाडोर जिसमें हम भारतीयों की तरह ही लोग ढसाढस भरे नजर आये। हमारी गाड़ी धीरे–धीरे भीड़–भाड़ वाले इलाके को छोड़ने के बाद पश्चिम की ओर कारेन नामक इलाके की ओर आने लगी जो शहर का सबसे धनाढ्य वर्ग का इलाका माना जाता है। अब भी इस इलाके में यरोपीय मूल के लोग बसते हैं। किसी जमाने में इस विस्तृत इलाके में कॉफी की खेती की जाती थी। कारेन नामक एक महिला इस भूभाग की मालकिन हुआ करती थी। पच्चीस किलोमीटर की दूरी तय करने के बाद हम चेमचेमी या उजिमा यानि संजीवन जल का स्रोत में थे जो सिस्टरों द्वारा चलाया जाता है। यहीं हमारा दो सप्ताहिक कार्यक्रम चलेगा।

जब से बराक ओबामा लिखित 'द डीरिम्स फ्रोम माय फादर' पढ़ा था केन्या और नैरोबी में मेरी विशेष रुचि हो गयी थी। उनकी अन्य पुस्तक – द ओडासिटी ऑफ होप भी मेरे लिये प्रेरणा का कारण रही

है। बराक ओबामा का 2008 में पहला अमेरिकी अश्वेत प्रेसीडेंड चुना जाना मेरे लिये अपने आप में एक प्रेरणा का कारण रहा है। चुनाव जीतने के बाद उनका राष्टपति के रूप में शपथ लेने के समय मैं पूरे समय तक टी वी के सामने बैठा था। बाद में इन्टरनेट में उनके भाषणों को देखता और उनके रोजाना सुबह के वक्तव्यों को मैं देखा करता था। बराक ओबामा के जीवन संघर्ष को मैंने उनकी दोनों ही किताबों में पढ़ा है और लाखों लोगों की तरह यह भी मेरे लिये एक प्रेरणा का स्रोत है। बराक ओबामा मूलतः केन्या के लुओ कबीले दल के हैं जो केन्या के उत्तरी क्षेत्र में स्थित है। बराक ओबामा के दादा जी एक अंग्रेजी सेना अफसर के बावर्ची हुआ करते थे। अपने गांव में वे एक वैघ के रूप में मशहूर हुआ करते थे। दवाईयों के कारण उनका अपने इलाके आना–जाना ज्यादा हुआ करता था। इसी क्रम में मीलों पैदल चलकर नैरोबी भी हो आये थे और किसी प्रकार उन्हें अंग्रेजी ऑफिसर के लिये खाना बनाने की नौकरी मिल गयी थी। द्वितीय विश्व महायुद्ध के समय वे कई उन सभी देशों में हो आये थे जहां अंग्रेजी सेना गयी थी। इसी से वे बराक ओबामा के पिताजी को स्कूल भेजने का अवसर दे पाये। बराक ओबामा के पिताजी एक साधारण लूओ कबीली थे लेकिन स्कूल में अवसर पाने के बाद बेहद तेज दिमाग के निकले। आरंभिक पढ़ाई अपने कस्बे में खत्म करने के बाद वे नैरोबी आ गये। अपनी स्कूल शिक्षा खत्म करने के बाद वे इस अवसर की तलाश में थे कि उन्हें कहीं से भी अच्छी शिक्षा के लिये विदेश में पढ़ने के लिये अवसर मिले। एक अमेरिकी महिला की मदद से उन्हें अमेरिकी युनीवर्सिटी में पढ़ने का अवसर मिला। यहीं उनकी मुलाकात बराक ओबामा की मां से हुई, और दोनों ने शादी की। हांलाकि केवल दो सालों के बाद वे बराक को अपनी मां और नाना नानी के हाथों छोड़कर केन्या लौट गये। फिर कुछ सालों के बाद उन्हें विश्व प्रसिद्ध हावर्ड युनीवर्सिटी में पढ़ने का मौका मिला। इतनी उंची पढ़ाई के बाद वे केन्याई सरकार में एक प्रशासिनिक सेवा में रहे।

उधर बराक ओबामा अपनी मां के साथ हो लिये और इंडोनेशिया में अपनी आरंभिक पढाई उन्होंने की। बाद में अच्छी शिक्षा के लिये बराक ओबामा की मां ने बराक को अपने नाना नानी के यहां वापस हवाई आईलैंड अमेरिका भेज दिया। शहर के एक अच्छे स्कूल में बराक ओबामा ने पढ़ाना शूरू किया जहां उसके अलावे सिर्फ एक ही अश्वेत लड़की को पढ़ने का अवसर मिला था। लेकिन वहां उसने अपना संघर्ष जारी रखा। श्वेत और अश्वेतों के बीच की अंदरुनी लड़ाई बराक को हमेशा कचोटती रहती थी। अश्वेतों पर सैकड़ो सालों की गुलामी का असर, दोनों पक्षों की मानसिकता और संस्कृति, दकियानुसीपन और मौन गुलामी और उंचा नहीं उठ पाने का दर्द, सबकुछ उसकी आंखों के सामने दिन ब दिन घटते रहता था। बराक के जेहन में एक क्रोध की ज्वाला उबलती रहती थी जिसे वह अपने क्लास में, बास्केलबॉल के मैदान में, स्टेज में दिशा देने का प्रयास करता रहता था। उसके ईद–गिर्द के अश्वेत बुजुर्ग सलाह देने की कोशिश करते लेकिन कभी नहीं बदलने के निराशा को भी अपने दिल में लेकर नशे का सहारा लेते थे। इन्हीं सबको अपनी आंखों में लिये अपनी युनीवर्सिटी की पढ़ाई बराक ने पूरी की।

चूंकि पढ़ाई में बराक को अच्छे अंक हासिल था वे कोई भी छोटी–मोटी नौकरी आसानी से कर सकते थे। लेकिन उनके मन में अश्वेतों का पूरा संसार था और उनके तकदीर और तस्वीर को बदलने की तम्मना। वे शिकागो आ गये और एक यहुदी साथी के साथ हो लिये जिसने उसे एक कम्युनिअी ऑरगानाइजर का जिम्मा थमाया। बराक का काम था शिकागो के उन इलाकों में जाकर लोगों को एक कर अपने अधिकारों की लड़ाई के लिये एकजुट करना। ऐसे कुछ इलाकों में अधिकतर अश्वेत ही लोग रहा करते थे। उनके घरों की गरीबी, पूरी शिक्षा नहीं कर पाने की लाचारी, बस्ती में गुंडागर्दी के शिकार लोग, युवतियों का बेसमय मां बन जाना, बेरोजगारी, महिलाओं को घरेलू कामकाज से उपर उठने का कोई अवसर नहीं, एकजुट होने के प्रयास को बार–बार विफल होना, यह सब तीन सालों तक बराक ओबामा ने नजदीक से देखा। सबसे बड़ी सफलता उसे उस समय मिली जब इलाके के सभी चर्चों ने अपनी अपनी हैसियत से उसे साथ दिया और कुछ मुद्दों को लेकर लोगों को उनका अधिकार मिला, नौकरी के अवसर मिले। इसी समय बराक ने खीस्तीय धर्म को अपनाते हुए टिरिनिटी चर्च के सदस्य बन गये। तीन सालों के बाद बराक को भी हॉवर्ड लॉ स्कूल में पढ़ाई करने का अवसर मिला। लॉ की डिग्री हासिल करने के बाद उन्हें पढ़ाने का भी अवसर मिला और अनेक लॉ के फर्म में काम करने का भी। लेकिन शिकागो के अश्वेतों के झुग्गी झोपड़ियों को वे कभी नहीं भुला पाये। इलयानवस के सेनेटर

का पद खाली होने पर उन्हें चुनाव में लड़ने के लिये लोगों ने न्योता दिया। चुनाव वहां उन्होंने ने सभी को अचंभित करते हुए जीता। और यह जीत उस समय तक खत्म नहीं हुई जब तक वे 2008 में अमेरिका के पहले अश्वेत राष्टपति नहीं बन गये। डा. मार्टिन लूथर किंग का सपना जो शायद अश्वेतों के सबसे बड़े नेता के रूप में जाने जाते थे जिन्होंने अश्वेतों के बराबरी के हक़ की लड़ाई लड़ी थी, बराक ओबामा के रूप में एक नयी मंजिल को प्राप्त की। इतनी बड़ी कामयाबी की जड़ कहीं न कहीं केन्या में गड़ी थी। और मैं इसी देश में आ गया था।

जारी .....

रंजीत पास्कल टोप्पो